दैनिक जागरण

24-5-2026

'स्थानीय भाषाओं के संरक्षण के लिए संस्थागत प्रयास जरूरी'

जागरण संवाददाता, रांची: स्थानीय भाषाओं के संरक्षण एवं विकास के लिए संस्थागत प्रयास अत्यंत आवश्यक है। ये बातें शनिवार को रांची विश्वविद्यालय की कुलपति डा. सरोज राय ने कहीं। वे इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची व रामलखन सिंह यादव कालेज के तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुई थी। उन्होंने शब्दसिंधु द्वारा क्षेत्रीय एवं विलुप्तप्राय भाषाओं के शब्दकोश निर्माण व अनुवाद कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि शोध एवं दस्तावेजीकरण के माध्यम से इन भाषाओं को नई पीढ़ी तक प्रभावी रूप से पहुंचाया जा सकता है। उन्होंने विवि एवं शोध संस्थानों से क्षेत्रीय भाषाओं पर अधिकाधिक शोध कार्य करने का आह्वान किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो एसएन मुंडा, मुख्य वक्ता डा. विनोद कुमार, कालेज के प्राचार्य डा. वीसी महतो, कला केंद्र के निदेशक डा. कुमार संजय झा, डा. दिनेश कुमार सहित अन्य मौजूद थे।

भाषा समाज की प्राण है और साहित्य उसका कलापक्ष : मुख्य वक्ता डा. विनोद कुमार ने कहा कि खोरठा झारखंड में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। भाषा समाज की प्राण है और साहित्य उसका कलापक्ष कहते हुए उन्होंने भाषा, साहित्य और समाज को एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़ा बताया। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में तकनीक के अनेक माध्यम उपलब्ध हैं, जिनके उपयोग से खोरठा भाषा और साहित्य को नई दिशा दी जा सकती है।

दैनिक भास्कर

24-5-2026

आरएलएसवाई में खोरठा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

मातृभाषा संरक्षण व क्षेत्रीय भाषाओं के अकादमिक विकास पर मंथन

रांची। रामलखन सिंह यादव कॉलेज में शनिवार को "खोरठा भाषा, साहित्य और समाज : ज्ञान परंपरा एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का आयोजन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केंद्र रांची एवं जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विष्णु चरण महतो ने कहा कि मातृभाषा समाज की संस्कृति और पहचान की आधारशिला होती है। मुख्य अतिथि प्रो. सरोज शर्मा ने कहा कि व्यक्ति अपनी मातृभाषा में ही सबसे सहज महसूस करता है। क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण और शोध के माध्यम से समाज की ज्ञान परंपरा को नई पहचान मिलती है। वहीं प्रो. सत्य नारायण मुंडा ने कहा कि भाषाओं में जल, जंगल और जमीन से जुड़ा पारंपरिक ज्ञान सुरक्षित रहता है, इसलिए भाषा संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। तकनीकी सत्र में शिक्षकों और शोधार्थियों ने खोरठा भाषा के इतिहास, लोकसाहित्य, मौखिक परंपरा और वर्तमान चुनौतियों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए।

मातृभाषा के संरक्षण और ज्ञान परंपरा पर हुआ मंथन

जासं, रांची: रामलखन सिंह यादव कालेज में शनिवार को खोरठा भाषा, साहित्य और समाज: ज्ञान परंपरा एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। यह संगोष्ठी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय केंद्र, रांची व जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के संयुक्त प्रयास से हुई। कार्यक्रम का उद्देश्य खोरठा भाषा, साहित्य, संस्कृति और उसकी ज्ञान परंपरा के संरक्षण एवं संवर्द्धन पर विचार-विमर्श करना था। टीआरएल विभाग की छात्राओं ने मधुर स्वागत गीत प्रस्तुत कर सभी अतिथियों का अभिनंदन किया। कार्यक्रम के समन्वयक एवं कालेज के प्राचार्य डा. विष्णु चरण महतो तथा डा. कुमार संजय झा ने सभी अतिथियों का अंगवस्त्र एवं पौधा भेंट कर स्वागत किया।

दैनिक जागरण
24-5-2026